जनवाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 6 रुपये

न बड़ा न छोटा

विष्णु नागर

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

न बड़ा न छोटा : विष्णु नागर
Na Bara Na Chhota : Vishnu Nagar

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन: विभास दास
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1996, 1997, 1999, 2003, 2006

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य: 6 रुपये

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi, Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773,***
email: bgvs@vsnl.net

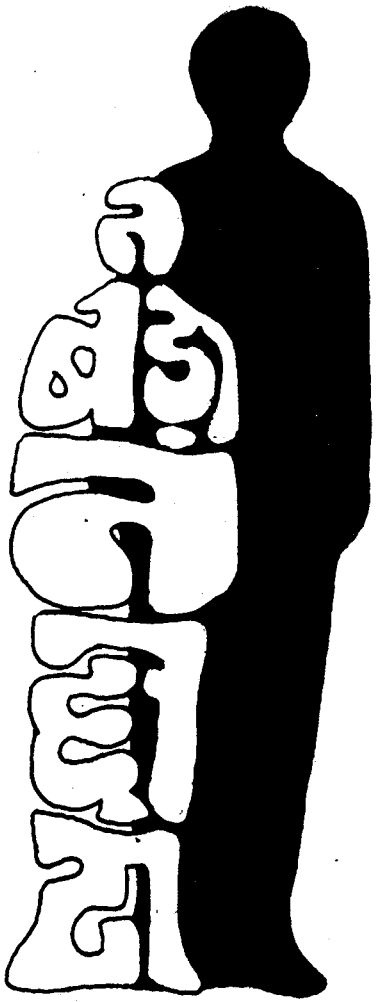

न बड़ा न छोटा

विष्णु नागर

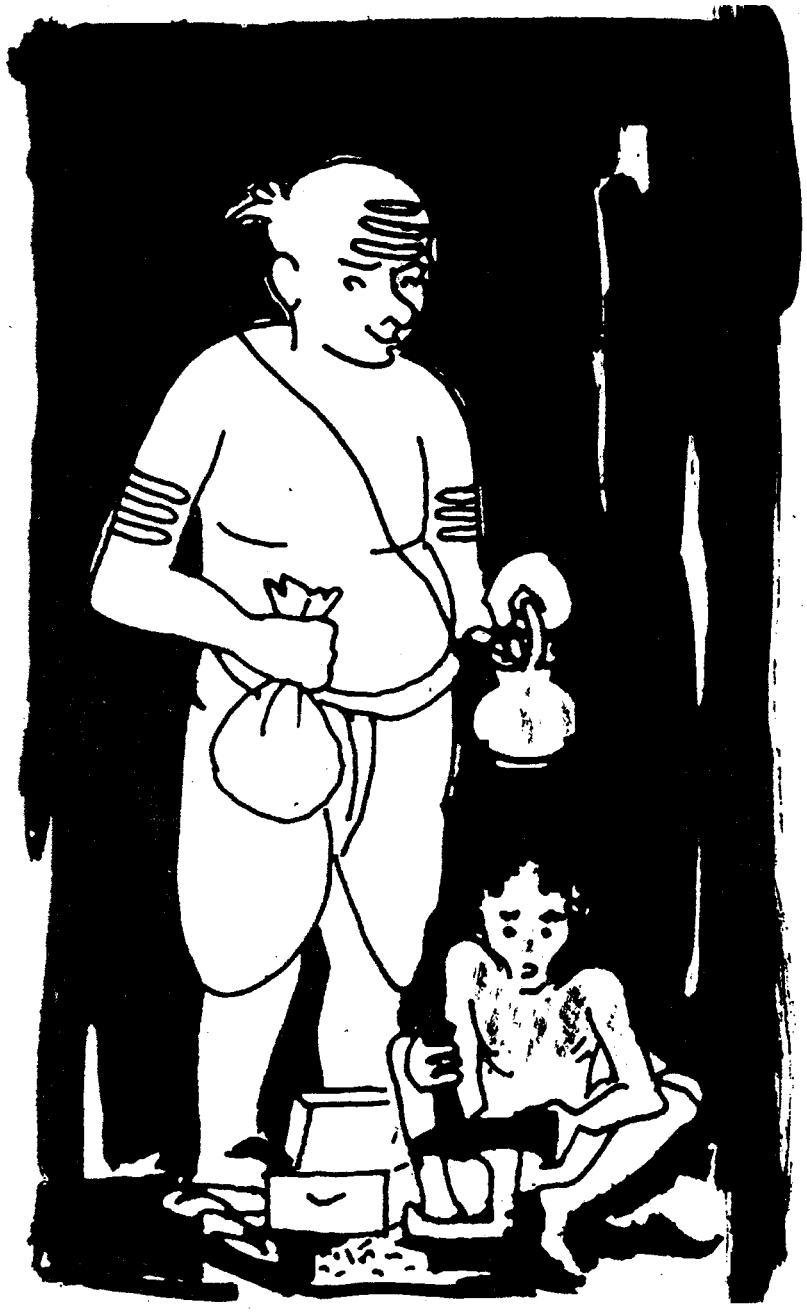

न बड़ा न छोटा

पुराना सवाल है–
कौन बड़ा और
कौन है छोटा ?

पुराना जवाब है–
बाभन बड़ा है
मोची छोटा

पुराना जवाब है–
अमीर बड़ा है
गरीब छोटा

पुराना जवाब है–
राजा बड़ा है
प्रजा छोटी

पुराना जवाब है–
मर्द बड़ा है
औरत छोटी।

पुराना जवाब है
गुस्सा जी बड़े हैं
ननकू छोटा

किसने बनाया
इसे बड़ा
उसे छोटा ?

वे कहते हैं–
भगवान ने।
अरे भई तब
सबकी क्यों हुईं
दो आंखें ?
किसी की दो होतीं
तो किसी की एक!
किसी के चार कान होते
किसी के तीन,
किसी के दो,
तो किसी के एक!
ऐसा क्यों न हुआ!
सभी के शरीर
एक से क्यों हैं ?

एक नाक
एक मुँह
एक पेट
दो कान
दो हाथ
दो पैर
सबके क्यों हैं ?

सभी को भूख क्यों लगती है ?
सभी को कानों से ही क्यों सुनाई देता है ?
सभी को आंखों से ही क्यों दिखाई देता है ?

सभी धर्मों
सभी जातियों में
गोरे भी क्यों हैं
और काले भी क्यों ?
बूचे भी क्यों हैं ?
और लम्बी नाक वाले भी क्यों ?

औरत मर्द
के संयोग से क्यों
हर देश
हर काल में

जन्म लेते हैं
बच्चे ही।
वे जवान होते हैं
फिर अधेड़
फिर बूढ़े
मरते सभी हैं ?
कोई अमर क्यों नहीं होता ?
जिस रावण के पेट में अमृत था,
वह भी क्यों मरा ?

फर्क किया हमने
जाति बनाई
फर्क किया।
धर्म बनाये
फर्क किया।
देश बनाये
फर्क किया।
गोरे और काले में
फर्क किया
मर्द और औरत में
फर्क किया
गरीब और अमीर बनाये और

फर्क को ज्यादा बढ़ाया
कमजोर और ताकतवर बनाये और
फर्क की खाई चौंड़ी की।
अब फर्क ही फर्क है
हर जगह फर्क है

फर्क है
तो नफरत भी है
फर्क है
तो दुश्मनी भी है
फर्क है
तो हिंसा भी है
फर्क है
तो गैरबराबरी भी है
फर्क है
तो अन्याय भी है

फर्क है
तो दलाल हैं
फर्क है
तो चोर हैं
फर्क है
तो लुटेरे हैं सफेदपोश।

फर्क है
तो ब्राह्मण हैं
फर्क है
तो वैश्य हैं
फर्क है
तो क्षत्रिय हैं
फर्क है
तो शूद्र हैं

झूठमूठ ब्राह्मण समझता है
मैं बड़ा हूँ
झूठमूठ पाखंडी समझता है
मैं बड़ा हूँ
झूठमूठ अमीर समझता है
मैं बड़ा हूँ
झूठमूठ बेईमान समझता है
मैं बड़ा हूँ
झूठमूठ लफंगा समझता है
मैं बड़ा हूँ
झूठमूठ गोरा समझता है
मैं बड़ा हूँ

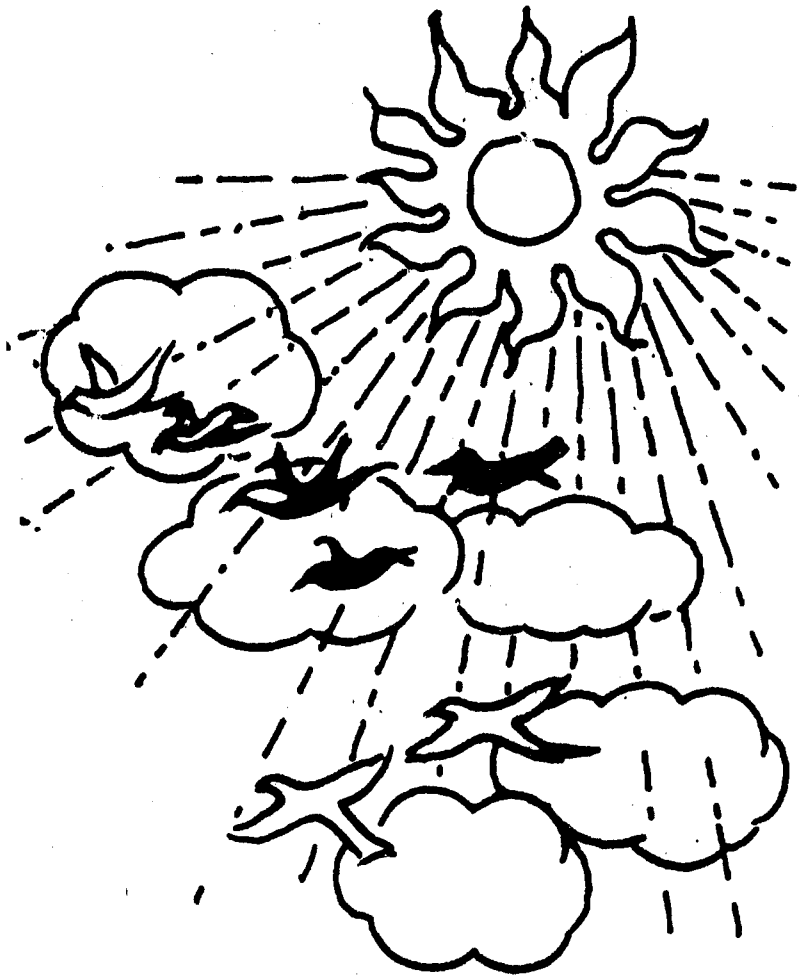

झूठमूठ मर्द समझता है
मैं बड़ा हूँ

किसने बनाया किसी को बड़ा–

हमने
क्योंकि हमने कुबूल कर लिया
कि हम छोटे हैं
वह ऊँच है
और हम नीच हैं।

वेद पढ़ने वालों ने कहा कि तुम
सुनोगे तो कान में सीसा
डाल देंगे
हमने नहीं सुना
लड्डू खाने वालों ने
हमें अपनी तरफ झाँकने से भी
मना किया
हमने मान लिया
उन्होंने रेशमी सुन्दर कपड़े पहने
हमें तारीफ करने से भी रोका
हमने यह मंजूर कर लिया
किसी के लिए
सब कुछ भोग्य
किसी के लिए
सब कुछ त्याज्य।
कोई मेहनत करने से भी शर्माये
किसी की कमर
झुककर टूट जाय

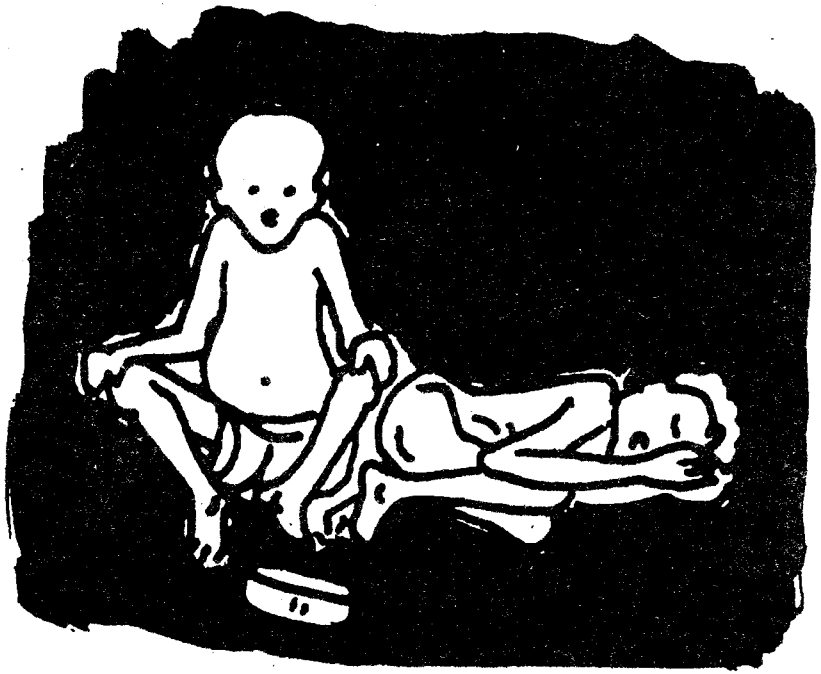

कोई सिर्फ कमाकर लाये
कोई सिर्फ डटकर खाये

जो कपड़े बनाये
वही नंगा रहता चला आये

जो अन्न उपजाये
वही खाने को तरस जाये

जो मकान बनाये
वही रहने की जगह न पाये

जो सड़क बनाये
उसी के चलने पर
सब ऊँगली उठायें
किसने बनाये ये विधान ?–
हमारे भाइयों ने।
किसने पैदा की यह ऊँच–नीच ?–
हमारे भाइयों ने।
किसने बनाये वर्ण ?–
हमारे भाइयों ने।
किसने बनाई जातियां ?–
हमारे भाइयों ने।
किसने कहा, धर्म के नाम पर
मारो काटो ?–
हमारे भाइयों ने।

किसने कहा, जाति के नाम पर
लूटो–बलात्कार करो ?–
हमारे भाइयों ने।

किसने कहा गोरा अच्छा है

काला बुरा ?–
हमारे भाइयों ने।

किसने बनाई
बड़ों की दुनिया
छोटों की दुनिया ?
क्या ईश्वर ने ?

किसने बनाई
जातियों की दुनिया
धर्मों की दुनिया

क्या ईश्वर ने ?

किसने बनाई
गोरों की दुनिया
कालों की दुनिया
क्या ईश्वर ने ?

किसने बनाई
भूखों की दुनिया
तोंदवालों की दुनिया
क्या ईश्वर ने ?

ईश्वर ने बनाई
तो पूछो उससे
क्यों बनाई ?
किसके फायदे के लिए बनाई ?
किसे न्याय दिलाने के लिए बनाई ?

समदर्शी वही है क्या ?
घट–घट वासी, वही है क्या ?
उसी का नाम
ईश्वर है क्या ?
अल्लाह है क्या ?

राम है क्या ?
रहीम है क्या ?
बुद्ध है क्या ?
महावीर है क्या ?
गॉड है क्या ?
सत श्री अकाल है क्या ?

इसी फर्क के लिए
इसी ऊँच-नीच के लिए
इसी ब्राह्मण-शूद्र के लिए
इसी हिन्दू-मुसलमान के लिए
याद करते हैं क्या हम उसे ?
पूजा करते हैं उसकी ?
नेवैद्य लगाते हैं उसे ?
उसी को अजान देकर पुकारते
हैं हम क्या ?

ठंड में
सभी को
क्यों अच्छी
लगती है
धूप ?
लू किसे पसन्द है ?

बरसात में उमड़ते-घुमड़ते-
गरजते बादल
सबको क्यों पसंद हैं ?
चाँद
तारे
आकाश
सूर्य
क्यों पसंद है
सबको ?
फर्क है
तो वह इन बातों में

क्यों नहीं दिखता ?

किसे लगता है आराम बुरा
किसे पसंद है हर वक्त काम
काम ही काम ?

धुंआ ही धुंआ
धूल ही धूल।
किसे अच्छी लगती है
बेइज्जती ?
किसे बुरा लगता है
मान-सम्मान ?
किसे जाड़ा नहीं लगता
और किसका शरीर
लू में नहीं जला करता ?
किसे बाढ़ में
अपने घर को बहते
देखना पसंद आता है ?
किसे अच्छा लगता है
फूस की झोपड़ी में रहना
और उसे फिर जलते भी देखना ?
किन औरतों को
अच्छा लगता है
बलात्कार ?
किन बच्चों को
पसंद है भूख
दूध जैसी !
कौन चाहता है
ऐ

अबे
ओबे
कहलाना ?
डाँट-मार
खाना ?
मार दिया जाना ?

तब क्यों है
यह सब ?
किसकी पसंद से है ?
किसका ईश्वर है वह
जिसे यह सब
भाता है ?
और भाता ही चला
आ रहा है ?

जरा मैं भी तो जानूं ?
जरा तुम भी तो जानो ?
जरा हम सब मिलकर तो जानें ?
बताओ भई
ऊँच-नीच के
मशालचियो
बताओ

अरे चुप क्यों हो मियाँ
तुम्हारी बोलती बंद अब
क्यों है ?

बोलो भई
जनतंत्र है
अब तो हम भी बोलने
लगे हैं
तो तुम क्यों चुप भये ?

❐❐❐❐